॥ देवी सूक्तम ॥

रिग्वेद सम्हित,. मन्डलम १०, अश्टकम ८, सूक्तम - १२५

ओम ॥

अहम रुद्रेभिर वसुभिश चराम्यहम आदित्यैरुत विश्वदेवैहि ।
अहम मित्रा वरुणोभा बिभर्म्यहम इन्द्राग्नी अहम अश्विनोभा ॥ १ ॥
अहम सोम माहनसम बिभर्म्यहम त्वश्टारमुत पूशणम भगम ।
अहम दधामि द्रविणम हविश्मतेय सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वतेय ॥ २ ॥
अहम राश्ट्री सन्गमनी वसूनाम चिकितुशी प्रथमा यग्यियानाम ।
ताम मा देवा व्यदधुह पुरुत्रा भूरिस्थात्राम भूर्या वेशयन तीम ॥ ३ ॥
मया सोऑन्नमत्ति यो विपश्यति यह प्राणिति यईम श्रुणोत्युक्तम ।
अमन्तवोमान्त उपक्शियन्ति श्रुधिश्रुत श्रद्धिवम तेय वदामि ॥ ४ ॥
अहमेव स्वयम इदम वदामि जुश्टम देवेभिरुत मानुशेभिहि ।
यम कामयेय तम तमुग्रम कृणोमि तम ब्रह्माणम तम्रुशिम तम सुमेधाम ॥ ५ ॥
अहम रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विशेय शरवेहन्त वा उ ।
अहम जनाय समदम क्रुणोम्यहम द्यावाप्रुथिवी आविवेश ॥ ६ ॥
अहम सुवेय पितरमस्य मूर्धन मम योनिरप्स्व अन्तह समुद्रेय ।
ततो वितिश्ठेय भुवनानु विश्वो तामूम द्याम वर्श्मणोपस्प्रुशामि ॥ ७ ॥
अहमेव वात~इव प्रवाम्य अरभमाणा भुवनानि विश्वा ।

परो दिवा परएना प्रुथिव्यै तावती महिना सम्बभूव ॥ ८ ॥
ओम शान्तिह शान्तिह शान्तिहि ॥

www.yousigma.com